प्राचीन और अर्वाचीन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्राचीन का अर्थ है–पुराना और अर्वाचीन का अर्थ है– नया। प्राचीन बुद्ध काल से जुड़ा हुआ है। वैसे तो समय अबाध गति से चल रहा है किन्तु मानव व्यवहार चलाने के लिए भूत, वर्तमान, भविष्य, प्राचीन और नवीन आदि भागों में विभक्त कर दिया है। खण्ड–खण्ड रूप से हम अपने जीवन और इतिहास को नहीं समझ सकते। आज जो कुछ भी प्रारब्ध है या उदय भाव है वह पूर्वजन्म के कर्म का परिणाम है। इतिहास प्राचीन वृतान्त को बताता है। प्राचीन से हमें शिक्षा मिलती है। प्राचीन को देखकर हम सुधार करके हम आगे बढ़ते हैं। वर्तमान में हम स्वतंत्र हैं। भूतकाल में हम स्वतंत्र नहीं थे, जैसा बीज बोया गया है वैसा परिणाम अवश्य मिलेगा। उसे बदला नहीं जा सकता।

प्राचीनकाल के संचित कर्म इकट्ठा रहते हैं। पूर्वजन्म के कर्म को प्रारब्ध कहा जाता है। प्राचीन और अर्वाचीन बदलते रहते हैं। अर्वाचीन प्राचीन हो जाता है, वर्तमान भूत हो जाता है और भविष्य वर्तमान बनकर भूत बन जाता है। भूत, वर्तमान और भविष्य बदलते रहते हैं। इसलिए सदैव वर्तमान में जीना चाहिए। रहो भीतर और जीओ बाहर। जिस समय जो कार्य किया जाता है चिंतन उसी के प्रति करना चाहिए। भाव क्रिया करनी चाहिए। कर्म ही जीवन के आधार बनते हैं।

प्राचीन चमकने वाली सभी वस्तुएं सोना नहीं होती और न ही वर्तमान समय की सभी वस्तुएं खराब होती हैं। समय के साथ–साथ नवीन–प्राचीन में परिवर्तित हो जाता है। समय सदैव एक सा नहीं रहता। चक्र के पहिए की तरह ऊपर–नीचे होता रहता है। काल के हिसाब से अगर देखा जाए तो सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग का क्रम चल रहा है। प्राचीन काल में सत्य का महत्व था। सत्य के लिए लोग प्राण दे देते थे। महाराज दशरथ ने कैकेयी के द्वारा मांगे गये वर को पूर्ण करने में अपने प्राण दे दिये। राम चौदह वर्ष तक वन में रहे और मर्यादा

की रक्षा के लिए उन्होंने पिता के वचन का पालन किया और मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। मर्यादा के कारण ही आज वे सर्वत्र पूजनीय हैं।

महाभारत का युद्ध भी प्राचीनकाल में हुआ। उसके आदर्श आज तक लोगों के जीवन में दिखाई देते हैं। महाभारत का युद्ध अधर्म पर धर्म की विजय का जयघोष था। भगवान श्रीकृष्ण ने पाण्डवों की तरफ से मार्गदर्शन करके इस कार्य को किया। जहां पर सत्य रहता है विजय वहीं होती है। धर्मराज युधिष्टर सत्य के प्रतीक हैं। दुर्योधन अधर्म और अन्याय का प्रतीक था। यह युद्ध धर्म और अधर्म के बीच किया गया युद्ध था। जिसमें धर्म की विजय हुई। इस युद्ध में यह दिखाया गया है कि यदि नारी का अपमान होता है तो विनाश निश्चित है। द्रोपदी का चीर हरण इस बात का प्रतीक था। न्याय जिधर होता है जीत उधर ही होती है।

प्राचीनकाल में हमारे देश में आश्रम व्यवस्था और पुरुषाथ चतुष्टय का पालन किया जाता था। ये दोनों भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास जीवन को नियमित करने के लिए चार आश्रम थे। पुरुषार्थ चार है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। पुरुषार्थ दो शब्दों से मिलकर बना है–पुरुष तथा अर्थ। पुरुष का अर्थ है विवेकशील प्राणी तथा अर्थ का तात्पर्य है लक्ष्य। अतः पुरुषार्थ का अर्थ है विवेकशील प्राणी का लक्ष्य। इस अर्थ में पुरुषार्थ एक और सांसारिक लक्ष्य और पारलौकिक लक्ष्य और कर्त्तव्य है तथा दूसरी और इसमें नैतिकता आर्थिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को संतुलित किया गया है। पुरुषार्थ के अंतर्गत मनुष्य भौतिक सुखों को उपभोग करते हुए धर्म का भी समान रूप से अनुसरण करके मोक्ष का अधिकारी होता है। मोक्ष भारतीय जीवन का परम लक्ष्य है। इसी की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य है।

प्राचीनकाल में जीवन में धर्म का पालन किया जाता था। धर्म शब्द का अर्थ धारण करना है। धर्म प्रजा को धारण करता है। धर्म मानव को कर्त्तव्यों सतकर्मों एवं गुणों की और ले जाता है। धर्म व्यक्ति की विविध रूचियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं आदि के बीच संतुलन बनाये रखता है। सदाचार ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। धर्म वही है जो किसी को कष्ट नहीं देता अपितु लोककल्याण करता है। धर्म का ही आश्रय ग्रहण करके व्यक्ति इस संसार में तथा

परलोक में शांति प्राप्त करता है जो व्यक्ति धर्म का सम्मान करता है धर्म उसकी सदैव रक्षा करता है। शरीर नष्ट हो जाने पर सबकुछ छूट जाता है। किन्तु धर्म जीव के साथ जाता है। धर्म को साक्षात् ईश्वर का स्वरूप माना गया है। तप, शौच, दया और सत्य धर्म के चार अंग है। धर्म का संबंध मनुष्य के अंतकरण से होता है। धर्म का पालन मनुष्य को अंतर्मुखी बनाकर शुद्ध कर देता है। दूसरा महत्वपूर्ण पुरुषार्थ अर्थ है जिस प्रकार आत्मा के लिए मोक्ष बुद्धि के धर्म और मन के लिए काम की आवश्यकता होती है उसी प्रकार शरीर के लिए अर्थ की आवश्यकता है। अर्थ के अभाव में जीवन चलाना बहुत ही कठिन हो जाता है। इसीलिए धन को भी पुरूषार्थ में स्थान देकर इसे उचित मानवीय आकांक्षा माना गया है।